1 सुभाषितानि

पाठसारः

'सुभाषित' शब्द 'सु + भाषित' इन दो शब्दों के मेल से बनता है। 'सु' का अर्थ—सुन्दर, मधुर तथा 'भाषित' का अर्थ है— कहा गया वचन। इस प्रकार सुभाषित का अर्थ है— सुन्दर वचन या मधुर वचन। प्रस्तुत पाठ में सूक्तिमञ्जरी, नीतिशतकम्, मनुस्मृतिः, शिशुपालवधम् पञ्चतन्त्रम् से रोचक और विचारपरक श्लोकों को संकलित किया गया है।

मूलपाठः, अन्वयः, शब्दार्थः, हिन्दी अनुवादः, भावार्थः च

1. गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।
सुस्वादुतोयाः प्रभवन्ति नद्यः समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः॥

अन्वयः— गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः (एव) भवन्ति। ते निर्गुणं प्राप्य दोषाः भवन्ति। (यथा) नद्यः आस्वादुतोयाः प्रभवन्ति। (ताः) समुद्रमासाद्य अपेयाः भवन्ति।

शब्दार्थः— गुणाः = सद्गुण। गुणज्ञेषु = गुणों को जानने वाले व्यक्तियों में। भवन्ति = होते हैं। ते = वे। निर्गुणं = गुणहीन व्यक्ति को। प्राप्य = प्राप्त होकर। दोषाः = अवगुण। आस्वादुतोयाः = स्वादिष्ट जलवाली। नद्यः = नदियाँ। प्रभवन्ति = उत्पन्न होती हैं। समुद्रम् = सागर में। अपेयाः = न पीने योग्य।

हिन्दी अनुवाद—गुण गुणों को जानने वाले व्यक्तियों के पास गुण होते हैं। वे गुण गुणहीन व्यक्ति के पास पहुँचकर दोष हो जाते हैं। नदियाँ स्वादिष्ट जलवाली उत्पन्न होती हैं। वे सागर में पहुँचकर न पीने योग्य हो जाती हैं।

भावार्थ— भावार्थोऽयम् अस्ति यत् सद्गुणाः गुणज्ञेषु तेषां महत्वं वा अवबोधकेषु जनेषु गुणाः भूत्वा एव तिष्ठन्ति। ते एव गुणाः यदा गुणहीनं जनं प्राप्यन्ते तदा तेषां प्रभावेण ते अवगुणरूपेण परिणमयन्ति। यथा नद्यः प्रभवकाले स्वादिष्ट जलपूर्णाः भवन्ति किन्तु सागरस्य लावणिकजले मिलित्वा तेषां जलं पेयं न भवन्ति। (भाव यह है कि सद्गुण गुणों को जानने वाले या उनके महत्व को समझने वाले व्यक्तियों के पास गुण रूप में ही विद्यमान रहते हैं। वे ही गुणहीन व्यक्ति को जब प्राप्त होते हैं, तो उनके प्रभाव से वे अवगुणों के रूप में बदल जाते हैं जैसे नदियों की उत्पत्ति के समय उनका जल स्वादिष्ट पीने योग्य होता है लेकिन समुद्र के खारे जल में मिलने पर पीने योग्य नहीं रहता है।)

2. साहित्य सङ्गीत कलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः तद्भागधेयं परमं पशूनाम्॥

अन्वयः— साहित्य-संगीत-कला-विहीनः (जनः) साक्षात् पुच्छ-विषाणहीनः पशुः। तद् पशूनां परमं भागधेयं (अस्ति)। (यत्) (सः) तृणं न खादन् अपि जीवमानः (अस्ति)।

शब्दार्थः— साहित्य- संगीत-कलाविहीनः = साहित्य और संगीत कला से रहित। साक्षात् = प्रत्यक्ष रूप से। पुच्छविषाणहीनः = पूँछ और सींग से रहित। पशुः = पशु, जानवर। पशूनां = जानवरों का। परमं = परम/श्रेष्ठ। भागधेयं = सौभाग्य। न खादन् अपि = न खाता हुआ भी। जीवमानः = जीवित रहता है।

हिन्दी अनुवाद—साहित्य और संगीत-कला से रहित व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से पूँछ और सींग से रहित पशु है। यह पशुओं का परम सौभाग्य है कि वह (मनुष्य) तिनके (घास) न खाता हुआ भी जीवित है।

भावार्थः— अस्मिन् पद्ये भर्तृहरिः अकथयत् यत् यः जनः साहित्यिकज्ञानेन संगीत-कलादीनां ज्ञानेन च रहितो भवति सः पुच्छविषाण-पशुचिह्नेन रहितो अपि वास्तविकरूपेण पशुः भवति। इदं पशूनां परमसौभाग्यं वर्तते यत् मानवः तृणान् न भक्षयन् अपि जीवनं धारयति। चेत् सः तृणान् भक्षयितुं आरभते तदा वराकाः पशवः किम् अखादन्। तृणानाम् अभावे ते बुभुक्षिताः एव अम्रियन्।

(भर्तृहरि ने बताया है कि जो व्यक्ति साहित्यिक ज्ञान और संगीतादि कलाओं के ज्ञान से हीन है वह व्यक्ति सींग-पूँछ आदि पशुओं के चिह्न न होते हुए भी वास्तविक रूप में पशु है। यह पशुओं का परम सौभाग्य है कि वह मनुष्य घास को न खाता हुआ भी जीवित है। यदि वह घास खाने लगता तो बेचारे पशु क्या खाते। घास के अभाव में वह भूखा मर जाता है।)

3. लुब्धस्य नश्यति यशः पिशुनस्य मैत्री नष्टक्रियस्य कुलमर्थपरस्य धर्मः।
विद्याफलं व्यसनिनः कृपणस्य सौख्यं राज्यं प्रमत्तसचिवस्य नराधिपस्य॥

अन्वयः— लुब्धस्य यशः, पिशुनस्य मैत्री, नष्टक्रियस्य कुलम्, अर्थपरस्य धर्मः, व्यसनिनो विद्याफलं, कृपणस्य सौख्यम्, प्रमत्तसचिवस्य नराधिपस्य राज्यं नश्यति।

शब्दार्थः— लुब्धस्य = लोभी का। पिशुनस्य = चुगलखोर का। मैत्री = मित्रता। नष्टक्रियस्य = जिसकी क्रिया नष्ट हो गयी है/निष्क्रिय का। कुलम् = कुल। अर्थपरस्य = धन पर आश्रित रहने वाले का। व्यसनिनः = बुरी आदत वालों का। विद्याफलम् = विद्या का फल। कृपणस्य = कंजूस का। सौख्यम् = सुख। प्रमत्तः = प्रमाद या आलस्य से युक्त। सचिवः = मन्त्री। नराधिपस्य = राजा का। राज्यम् = राज्य। नश्यति = नष्ट हो जाता है।

हिन्दी अनुवाद— लोभी का यश, चुगलखोर की मित्रता, निष्क्रिय का कुल (वंश), धन पर आश्रित रहने वाले का धर्म, बुरी आदत वालों का विद्या का सुफल, कंजूस का सुख, प्रमादग्रस्त सचिव वाले राजा का राज्य नष्ट हो जाता है।

भावार्थः— भावोऽयं यत् यः जनः लोभं करोति तस्य कोऽपि मित्रं न भवति। यस्य जनस्य क्रियाशीलता नश्यति तस्य वंशो समाप्यते। यः जनः धनं महत्वं ददाति धर्मो तस्य सहयोगं न करोति। येषु जनेषु अनेकाः दुर्व्यसनाः भवन्ति तेषां विद्यार्जनेन अधिगतं फलं नश्यति। कृपणस्य जनस्य सौख्यं नश्यति। यस्य राज्ञः सचिवः प्रमदग्रस्तो तस्य राज्यं नश्यति।

(जो व्यक्ति लोभ करता है उसका कोई मित्र नहीं बनता है। जिस व्यक्ति की क्रियाशीलता नष्ट हो जाती है उसका वंश समाप्त हो जाता है। जो व्यक्ति धन को महत्व देता है धर्म उसका साथ नहीं देता है। जिन व्यक्तियों में अनेक प्रकार के दुर्व्यसन होते हैं उनका विद्यार्जन से प्राप्त फल नष्ट हो जाता है। कंजूस व्यक्ति का सुख-चैन समाप्त हो जाता है। जिस राजा का मन्त्री आलसी होता है उसका राज्य नष्ट (खत्म) हो जाता है।)

4. पीत्वा रसं तु कटुकं मधुरं समानं माधुर्यमेव जनयेन्मधुमक्षिकासौ।
सन्तस्तथैव समसज्जनदुर्जनानां श्रुत्वा वचः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति॥

अन्वयः— असौ मधुमक्षिका तु कटुकं रसं मधुरं समान पीत्वा माधुर्यमेव जनयेत् तथा एव सन्तः सम सज्जन दुर्जनानां वचः श्रुत्वा मधुर-सूक्तरसं सृजन्ति।

शब्दार्थः— असौ = यह। मधुमक्षिका = मधुमक्खी। तु = तो। कटुकं = कड़वे। रसं = रस को। पीत्वा = पीकर। मधुरं समानं = मीठे के समान। माधुर्यम् = मधुरता (शहद) को। एव = ही। जनयेत् = उत्पन्न करती है। तथैव = उसी प्रकार ही। सन्तः = सन्त लोग। दुर्जनानां = दुष्टों के। वचः = वचन। समसज्जन = सज्जनों के समान। श्रुत्वा = सुनकर। मधुरसूक्तरसं = मधुर सूक्तों के रस वाली मधुर सूक्ति रूप रस का। सृजन्ति = निर्माण करते हैं।

हिन्दी अनुवाद— यह मधुमक्खी तो कटुरस को मीठे के समान पीकर मधुरता को ही उत्पन्न करती है। उसी प्रकार ही सन्तजन दुर्जनों के वचनों को भी सज्जनों के समान सुनकर मधुर सूक्ति रस का निर्माण करते हैं।

भावार्थः— भावोऽयं यत् सन्तजनं दुष्टजनानां कटुवचनानि अपि सज्जनवचनैः इव आकर्णयन्ति किन्तु तान् प्रति दुर्वाक्यानां प्रयोगं न कुर्वन्ति अपितु मधुरव्यवहारम् एव कुर्वन्ति। यथा मधुमक्षिका कटुरसं पिबति किन्तु मधुररसमेव जनयति।

(भाव यह है कि सन्तजन दुर्जनों के कटु वचनों को भी सज्जनों के वचनों के समान सुनते हैं लेकिन उनके प्रति दुष्टतापूर्ण वचनों का प्रयोग नहीं करते अपितु मधुरता का व्यवहार करते हैं। जिस प्रकार मधुमक्खी कड़वे रस को पीती है लेकिन मधुर शहद को उत्पन्न करती है।)

6. पुष्पपत्रफलच्छायामूलवल्कलदारुभिः।
धन्या महीरुहाः येषां विमुखं यान्ति नार्थिनः॥

अन्वयः— पुष्पैः पत्रैः फलैः छायया मूलैः वल्कलैः दारुभिः (एत) महीरुहाः धन्याः येषाम् अर्थिनः विमुखः न यान्ति।

शब्दार्थः— पुष्पैः = पुष्पों से। पत्रैः = पत्तों से। फलैः = फलों से। छायया = छाया से। मूलैः = जड़ों से। वल्कलैः = छालों से। दारुभिः = लकड़ियों से। महीरुहाः = वृक्ष। धन्याः = धन्यः। अर्थिनः = प्रार्थना करने वाले याचकों। विमुखः = मुँह नहीं मोड़ते । न = नहीं। यान्ति = होते हैं।

हिन्दी अनुवाद— ये वृक्ष धन्य हैं जो पुष्पों से, पत्तों से, फलों से, छाया से, जड़ से, छालों से, लकड़ियों से जिनके याचक विमुख नहीं होते हैं।

भावार्थः— प्रस्तुते पद्ये उद्यमस्य महत्वं प्रतिपादयन् कथितम् यत् येः जनाः पुरुषार्थं अर्थात् कार्यस्य इच्छाशक्तिं त्यक्त्वा भाग्ये एव आश्रितो भूत्वा निष्क्रियो भूत्वा तूष्णीम् एव तिष्ठन्ति तेषां प्रभावेण कोऽपि प्रभावितो भयभीतो वा न भवति यथा राजभवनस्य द्वारे स्थितेः सिंहमूर्तेः सिरसि काकाः तिष्ठन्ति। (यहाँ वृक्षों की परोपकारिता के बारे में बताया गया है। ये वृक्ष धन्य हैं जो पुष्प-पत्र, फल-छाया, जड़, वल्कलों (छालों) से लकड़ियों से परोपकार करते हैं और याचकों को कभी निराश नहीं करते हैं। अर्थात् याचकों से विमुख नहीं होते हैं।)

5. **विहाय पौरुषं यो हि दैवमेवावलम्बते।**
प्रसादसिंहवत् तस्य मूर्ध्नि तिष्ठन्ति वायसाः॥

अन्वयः— यो पौरुषं विहाय हि दैवम् एव अवलम्बते। प्रासादसिंहवत् तस्य मूर्ध्नि वायसाः तिष्ठन्ति।

शब्दार्थः— यः = जो। पौरुषं = पुरुषार्थ को। हि = वस्तुतः। विहाय = छोडकर। दैवम् = भाग्य। एव = ही। अवलम्बते = आश्रित रहते हैं। प्रासादसिंहवत् = महल के द्वार पर स्थित सिंह की भाँति। मूर्ध्नि = सिर पर। तिष्ठन्ति = बैठते हैं। तस्य = उसके। वायसाः = कौए।

हिन्दी अनुवादः— जो व्यक्ति पुरुषार्थ/उद्यम को छोड़कर वस्तुतः भाग्य पर ही आश्रित रहते हैं। महल के द्वार पर स्थित सिंह की मूर्ति के समान उसके सिर पर कौए बैठते हैं।

भावार्थः— अस्मिन् श्लोके तरुणां परोपकारितायाः विषये उद्‌बोधितम् यत् इमेः वृक्षाः धन्यवादार्हयाः ये पुष्पपत्रफलच्छायामूलवल्कलकाष्ठेन च परोपकारं कुर्वन्ति याचकान् निराशं न कुर्वन्ति। अर्थात् याचकेभ्यः पराङ्मुखाः न भवन्ति। (प्रस्तुत पद्य में पुरुषार्थ के महत्व का प्रतिपादन करते हुए कहा गया है कि जो व्यक्ति पुरुषार्थ अर्थात् कार्य करने के साहस या इच्छाशक्ति को त्यागकर भाग्य पर भरोसा करके चुपचाप निष्क्रिय होकर बैठ जाते हैं तो उनके प्रभाव से कोई प्रभावित या भयभीत नहीं होता है, जिस प्रकार राजमहल के द्वार पर स्थित सिंह की मूर्ति के सिर पर कौए बैठते हैं।)

7. **चिन्तनीया हि विपदाम् आदावेव प्रतिक्रियाः।**
न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे॥

अन्वयः— विपदाम् आदौ एव हि प्रतिक्रिया चिन्तनीया। गृहे वह्निना प्रदीप्ते कूपखननं न उपयुक्तम्।

हिन्दी अनुवादः— विपत्ति के पहले ही उसके प्रतिकार का उपाय सोच लेना चाहिए। (क्योंकि) घर में आग लगने पर कुआँ खोदना उचित नहीं है।

भावार्थः— भावोऽयं यत् विपत्कालात् पूर्वमेव तस्य प्रतिकारस्य उपायं चिन्तयेत्। तेन प्रतिस्पर्धा कर्तुम् उपायं उपायं च चिन्तयेत्। विपत्काले प्राप्ते उपायं चिन्तनम् तथा व्यर्थं सिध्यति यथा आवासे अग्नि-प्रज्ज्वलिते कूपखननं व्यर्थं भवति।

(भाव यह है कि विपदा के आने से पूर्व ही उसे दूर करने या उसका मुकाबला करने का उपाय सोच लेना चाहिए। उससे निबटने की पूरी तैयारी कर लेनी चाहिए। विपत्ति आने पर उपाय सोचना उसी प्रकार व्यर्थ सिद्ध होता है जैसे कि घर में आग लग जाने पर तत्काल कुआँ खोदना व्यर्थ होता है।)

पाठ्यपुस्तकस्य प्रश्नोत्तराणि

1. पाठे दत्तानां पद्यानां सस्वरवाचनं कुरुत। (पाठ में दिए गए पद्यों का सस्वर वाचन कीजिए।)

उत्तरम्— छात्राः शिक्षक सहायतया कुरुत। (छात्र शिक्षक की सहायता से करें।)

2. श्लोकांशेषु रिक्तस्थानानि पूरयत—(श्लोकों के अंशों में रिक्तस्थानों को पूरा कीजिए—)

(क) समुद्रमासाद्य ....।

(ख) .... वचः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति।

(ग) तद्भागधेयं .... पशूनाम्।

(घ) विद्याफलं ························ कृपणस्य सौख्यम्।

(ङ) पौरुषं विहाय यः ················ अवलम्बते।

(च) चिन्तनीया हि विपदाम् ················ प्रतिक्रियाः।

उत्तरम्—(क) भवन्त्यपेयाः, (ख) श्रुत्वा, (ग) परमं, (घ) व्यसनिनः, (ङ) दैवम्, (च) आदावेव।

3. प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत—(प्रश्नों के उत्तर एक पद में लिखो।)

(क) व्यसनिनः किं नश्यति ? (बुरी लत वाले का क्या नष्ट होता है?)

(ख) कस्य यशः नश्यति ? (किसका यश नष्ट हो जाता है?)

(ग) मधुमक्षिका किं जनयति? (मधुमक्खी क्या उत्पन्न करती है?)

(घ) मधुरसूक्तरसं के सृजन्ति ? (मधुर सूक्तरस को कौन उत्पन्न करते हैं?)

(ङ) अर्थिनः केभ्यः विमुखा न यान्ति? (याचकों से कौन विमुख नहीं होते हैं?)

उत्तरम्— (क) विद्याफलम् (विद्या का फल) (ख) लुब्धस्य (लोभी का) (ग) माधुर्यं (मधुरता/शहद को) (घ) सन्तः (सज्जन) (ङ) वृक्षेभ्यः / मरीरुहाः (पेड़)

4. अधोलिखित-तद्भव शब्दानां कृते पाठात् चित्वा संस्कृतपदानि लिखत—

(निम्नलिखित तद्भव शब्दों के लिये पाठ से संस्कृत पद चुनकर लिखो।)

यथा— कंजूस — कृपणः

(1)	कड़वा	—	....	उत्तरम्— (1)	कड़वा	—	कटुकम्
(2)	पूँछ	—	....	(2)	पूँछ	—	पुच्छः
(3)	लोभी	—	....	(3)	लोभी	—	लुब्धः
(4)	मधुमक्खी	—	....	(4)	मधुमक्खी	—	मधुमक्षिका
(5)	तिनका	—	....	(5)	तिनका	—	तृणम्

5. अधोलिखितेषु वाक्येषु कर्तृपदं क्रियापदं च चित्वा लिखत— (निम्नलिखित वाक्यों में कर्तृपद और क्रियापदों का चयन करके लिखो।)

वाक्यानि		कर्ता	क्रिया
यथा— सन्तः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति।		सन्तः	सृजन्ति
(क) निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।	उत्तरम्— (क)	दोषाः	भवन्ति
(ख) गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति।	(ख)	गुणाः	भवन्ति
(ग) मधुमक्षिका माधुर्यं जनयेत्।	(ग)	मधुमक्षिका	जनयेत्
(घ) पिशुनस्य मैत्री यशः नाशयति।	(घ)	पिशुनस्य मैत्री	नाशयति
(ङ) नद्यः समुद्रमासाद्य अपेयाः भवन्ति।	(ङ)	नद्यः	भवन्ति

6. रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत— (रेखाङ्कित पदों को आधार बनाकर प्रश्न-निर्माण करो।)

(क) गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति। (गुण गुणों को जानने वालों में गुण होते हैं।)

(ख) नद्यः सुस्वादुतोयाः भवन्ति। (नदियाँ स्वादिष्ट जल वाली होती हैं।)

(ग) लुब्धस्य यशः नश्यति। (लोभी का यश नष्ट हो जाता है।)

(घ) मधुमक्षिका माधुर्यमेव जनयति। (मधुमक्खी मधुरता को उत्पन्न करती है।)

(ङ) तस्य मूर्ध्नि तिष्ठन्ति वायसाः। (उसके सिर पर कौए बैठते हैं।)

उत्तरम्—(क) के गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति ? (कौन गुणों को जानने वालों में गुण होते हैं?)

(ख) काः सुस्वादुतोयाः भवन्ति ? (कौन स्वादिष्ट जल वाली होती हैं?)

(ग) कस्य यशः नश्यति ? (किसका यश नष्ट हो जाता है?)

(घ) का माधुर्यमेव जनयति ? (कौन मधुरता को उत्पन्न करता है?)

(ङ) तस्य कस्मिन् तिष्ठन्ति वायसाः। (उसके किस पर कौए बैठते हैं?)

7. उदाहरणानुसारं पदानि पृथक् कुरुत— (उदाहरण के अनुसार पदों को पृथक् (अलग) करें।)

यथा—समुद्रमासाद्य	—	समुद्रम्	+	आसाद्य
माधुर्यमेव	—	....	+	....
अल्पमेव	—	....	+	....
सर्वमेव	—	....	+	....
दैवमेव	—	....	+	....
महात्मनामुक्तिः	—	....	+	....
विपदामादावेव	—	....	+	....

उत्तरम्—

(क)	माधुर्यमेव	—	माधुर्यम्	+	एव
(ख)	अल्पमेव	—	अल्पम्	+	एव
(ग)	सर्वमेव	—	सर्वम्	+	एव
(घ)	दैवमेव	—	देवम्	+	एव
(ङ)	महात्मनामुक्तिः	—	महात्मनाम्	+	उक्तिः
(च)	विपदामादावेव	—	विपदाम्	+	आदावेव।

योग्यता-विस्तारः

इस पाठ में महापुरुषों के स्वभाव गुणवान, लोगों की प्रशंसा, सज्जनों द्वारा प्रयुक्त वाणी, साहित्य-संगीत कला का महत्व, चुगली करने वालों के साथ रहने से होने वाली हानि, स्त्रियों के सम्मान व उनकी खुशी से सबकी खुशी का उल्लेख किया गया है। भाषा अलंकारों से युक्त है। पाठ में आये श्लोकों के समान नीतिगत अन्य सुभाषितों को भी पढ़कर जीवन में उनकी उपयोगिता पर विचार करें।

(क) **येषां न विद्या तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।**
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।
(जिनके पास न विद्या है, न तप है, न दान है, न ज्ञान है, न सच्चरित्र है, न गुण है, न धर्माचरण है वे पृथ्वी पर भार बने हुए मनुष्यों के रूप में पशुओं के समान विचरण करते हैं।

(ख) गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिंगं न च वयः। (गुणावान् लोगों की पूजा/सम्मान का आधार उनके गुण होते हैं। लिंग और आयु नहीं।)

(ग) न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः। (धैर्यशाली लोग न्याय के मार्ग से अपने कदमों को विचलित नहीं करते हैं।)

(घ) दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाऽलङ्कृतोऽपि सन्। (विद्या से अलंकृत/सुशोभित होते हुए भी दुष्ट व्यक्ति को त्याग देना चाहिए।)

(ङ) न प्राणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्तमानाम्। (प्राणों का अन्त होने पर भी उत्तम लोगों के स्वभाव में विकार उत्पन्न नहीं होते हैं।)

(च) उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तङ्गते तथा। (उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च) (सूर्य उदय होते समय लाल वर्ण (रंग) का होता है, अस्त होते समय भी लाल वर्ण (रंग) का होता है उसी प्रकार सुख और दुख में महान् व्यक्तियों की एकरूपता रहती है।)

उपर्युक्त सुभाषितों के अंशों को छात्र पढ़ें और स्वयं समझें। संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं के अन्य सुभाषितों का संग्रह करें।
'गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति'— यहाँ विसर्ग लोप सन्धि के नियम का प्रयोग हुआ है क्योंकि 'गुणाः' के विसर्ग का दोनों बार लोप हुआ है। लोप के बिना पंक्ति 'गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति' होगी।

2 बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता

प्रस्तुत पाठ संस्कृत के प्रसिद्ध कथाग्रन्थ 'पञ्चतन्त्रम्' के तृतीय तन्त्र 'काकोलूकीयम्' से संकलित है। पञ्चतन्त्र के मूल लेखक विष्णुशर्मा हैं। इसमें पाँच खण्ड हैं जिन्हें 'तन्त्र' कहा गया है। इनमें गद्य-पद्य रूप में कथाएँ दी गयी हैं जिनके पात्र मुख्यत: पशु-पक्षी हैं।

मूलपाठ:, शब्दार्थ:, हिन्दी अनुवाद: अवबोधन कार्यम् च

(1) कस्मिंश्चित् वने खरनखर: नाम सिंह: प्रतिवसति स्म। स: कदाचित् इतस्तत: परिभ्रमन् क्षुधार्त: न किञ्चिदपि आहारं प्राप्तवान्। तत: सूर्यास्तसमये एकां महतीं गुहां दृष्ट्वा स: अचिन्तयत्—"नूनम् एतस्यां गुहायां रात्रौ कोऽपि जीव: आगच्छति। अत: अत्रैव निगूढो भूत्वा तिष्ठामि" इति।

शब्दार्थ:—कस्मिंश्चित् = किसी। वने = वन में। प्रतिवसति स्म = रहता था। स: = वह। कदाचित् = एक बार। इतस्तत: = इधर-उधर। परिभ्रमन् = घूमता हुआ। क्षुधार्त: = भूख से पीड़ित। किञ्चिदपि = थोड़ा-सा भी। आहारम् = भोजन। प्राप्तवान् = प्राप्त किया। तत: = तब। सूर्यास्तसमये = सूर्य अस्त होने के समय। एकाम् = एक। महतीम् = विशाल। गुहाम् = गुफा को। दृष्ट्वा = देखकर। अचिन्तयत् = सोचा। नूनम् = अवश्य ही। एतस्याम् = इसमें। रात्रौ = रात में। कोऽपि = कोई भी। जीव: = प्राणी। आगच्छति = आता है। अत: = इसलिये। अत्रैव = यहाँ पर ही। निगूढ: = छिपकर। तिष्ठामि = बैठ जाता हूँ।

हिन्दी अनुवाद—किसी वन में खरनखर नामक सिंह रहता था। कभी इधर-उधर घूमते हुए भूख से पीड़ित थोड़ा-सा भी आहार प्राप्त नहीं किया। इसके बाद सूर्य के अस्त होने के समय एक विशाल गुफा को देखकर उसने विचार किया- निश्चय ही इस गुफा में रात को कोई जीव आता है। इसलिए यहाँ पर ही छिपकर बैठ जाता हूँ।

1. सिंहस्य किम् नाम आसीत्?
2. सिंह कुत्र प्रतिवसति स्म?
3. सिंह: कदा महती गुहाम् अपश्यत्?
4. गुहा कीदृशी आसीत्?
5. गुहां दृष्ट्वा सिंह: किम् अचिन्तयत्?
6. सिंह: कथं तत्र अतिष्ठत्?
7. 'अत्रैव' इत्यस्य सन्धिविच्छेदं कुरुत?
8. 'भूत्वा' इत्यस्मिन् पदे प्रकृति-प्रत्ययौ लिखत।

उत्तरम्– 1. सिंहस्य नाम खरनखर: आसीत्। 2. सिंह: कस्मिंश्चित् वने प्रतिवसति स्म। 3. सिंह: सूर्यास्तसमये एकां महतीं गुहाम् अपश्यत्। 4. गुहा महतीं आसीत्। 5. गुहां दृष्ट्वा सिंह: अचिन्तयत् यत् नूनम् एतस्यां गुहायां रात्रौ कोऽपि जीव: आगच्छति। 6. सिंह: तत्र निगूढो भूत्वा अतिष्ठत्। 7. अत्र+एव (वृद्धि सन्धि)। 8. भू धातु: (प्रकृति:) क्त्वा प्रत्यय: वर्तते।

(2) एतस्मिन् अन्तरे गुहाया: स्वामी दधिपुच्छ: नामक: शृगाल: समागच्छत्। स च यावत् पश्यति तावत् सिंहपदपद्धति: गुहायां प्रविष्टा दृश्यते, न च बहिरागता। शृगाल: अचिन्तयत्—"अहो विनष्टोऽस्मि। नूनम् अस्मिन् बिले सिंह: अस्तीति तर्कयामि। तत् किं करवाणि ?"

शब्दार्थ:—एतस्मिन् = इसी। अन्तरे = बीच। गुहाया: = गुफा का। नामक: = नाम का। शृगाल: = गीदड़। समागच्छत् = आ गया। च = और। यावत् = ज्यों ही। पश्यति = देखता है। तावत् = त्यों ही। सिंहपद = सिंह के पैरों के। पद्धति: = निशान। प्रविष्टा = प्रविष्ट हुए, अन्दर जाते हुए। दृश्यते = दिखाई पड़ते हैं। बहि: = बाहर। आगता = आए। अचिन्तयत् = सोचने लगा। विनष्ट: = नष्ट हो गया। नूनम् = अवश्य ही। अस्मिन् = इस। अस्तीति = है ऐसा। तर्कयामि = महसूस करता हूँ/लगता है। किं = क्या। करवाणि = करूँ।

हिन्दी अनुवाद—इसी बीच गुफा का स्वामी दधिपुच्छ नाम का सियार आ गया और वह ज्यों ही देखता है त्यों हि सिंह के पैरों के चिह्न गुफा में प्रविष्ट हुए दिखाई पड़ते हैं और बाहर नहीं आये। सियार ने सोचा- अरे नष्ट हो गया हूँ। निश्चय ही इस गुफा में सिंह है ऐसा लगता है। तो क्या करूँ।

1. गुहायाः स्वामी कः आसीत्?
2. शृगालः किम् अपश्यत्?
3. शृगालस्य किम् नाम आसीत्?
4. सिंहस्यपदपद्धतिः बहिरागता न वा?
5. शृगालः किम् अचिन्तयत्?
6. शृगालः किं तर्कयति?
7. 'प्रविष्टा' इत्यस्य विलोमपदं किम्?
8. 'अस्तीति' पदस्य सन्धिविच्छेदं कुरुत।

उत्तरम्– 1. गुहायाः स्वामी दधिपुच्छः नामकः शृगालः आसीत्। 2. शृगालः सिंहस्यपदपद्धतिः अपश्यत्। 3. शृगालस्य नाम दधिपुच्छः आसीत्। 4. सिंहस्यपदपद्धतिः बहिः न आगता। 5. शृगालः अचिन्तयत्-अहो! विनष्टोऽस्मि। 6. शृगालः तर्कयति यत्-नूनम् अस्मिन् बिले सिंहः अस्ति। 7. बहिरागता। 8. अस्ति+इति (दीर्घसन्धिः)

(3) एवं विचिन्त्य दूरस्थः रवं कर्तुमारब्धः—"भो बिल ! भो बिल ! किं न स्मरसि, यन्मया त्वया सह समयः कृतोऽस्ति यत् यदाहं बाह्यतः प्रत्यागमिष्यामि तदा त्वं माम् आकारयिष्यसि ? यदि त्वं मां न आह्वयसि तर्हि अहं द्वितीयं बिलं यास्यामि इति।"

शब्दार्थः—एवम् = इस प्रकार। विचिन्त्य = विचार कर। दूरस्थः = दूर खड़ा होकर। रवं = आवाज। कर्तुम् = करना। आरब्ध = आरम्भ किया (शुरू किया)। स्मरसि = याद करते हो। यन्मया = कि मैंने। त्वया सह = तुम्हारे साथ। समयः = प्रतिज्ञा, शर्त। कृतः = की। यत् = कि। यदा = जब। बाह्यतः = बाहर से। प्रत्यागमिष्यामि = लौटूँगा। तब = तब। आकारयिष्यसि = बुलायेगी। आह्वयसि = बुलाती है। तर्हि = अवश्य ही। अहं = मैं। द्वितीयं = दूसरा। यास्यामि = चला जाऊँगा।

हिन्दी अनुवाद—इस प्रकार विचार करके दूर स्थित होकर आवाज करना आरंभ कर दिया- हे गुफा! क्या याद नहीं कर रही हो कि मेरे द्वारा तुम्हारे साथ शर्त की गई थी कि जब मैं बाहर से वापस लौटूँगा तब तुम मुझे बुलाओगी। यदि तुम मुझे नहीं बुलाओगी तो मैं दूसरे बिल में चला जाऊँगा।

1. दूरस्थः शृगालः किं कर्तुमारब्धः?
2. 'यदि त्वं मां न आह्वायसि तर्हि अहं द्वितीयं बिलं गमिष्यामि।' इति केनोक्तम्?
3. शृगालः बिलम् किम् अकथयत्?
4. शृगालेन किं समयकृतोऽस्ति?
5. 'बाह्यतः' इत्यस्य कोऽर्थः?
6. यदि गुहा शृगालं न आह्वायति तदा शृगालः किं करिष्यति?
7. 'कर्तुम्' इत्यस्मिन् पदे प्रकृति प्रत्ययौ पृथक्कृत्वा लिखत।
8. 'गमिष्यामि' इत्यस्मिन् पदे धातुः वचनं पुरुषः लकारः च लिखत।

उत्तरम्– 1. दूरस्थः शृगालः रवं कर्तुमारब्धः। 2. इति शृगालेनोक्तम्। 3. शृगालः बिलम् अकथयत् यत्- भो बिल! भो बिल! किं न स्मरसि यन्मया त्वया सह समयः कृतोऽस्ति। 4. शृगालेन समयकृतोऽस्ति यत् यदाहं बाह्यतः प्रत्यागमिष्यामि तदा त्वं माम् आकारयिष्यति। 5. अस्य अर्थः बहिः/अन्यतः अस्ति। 6. यदि गुहा शृगालं न आह्वायति तदा शृगालः द्वितीयं बिलं गमिष्यति। 7. कृ धातु तुमुन् प्रत्ययः अस्ति। 8. गम् धातुः, एकवचनम्, उत्तमपुरुषः लृट्लकार च अस्ति।

(4) अथ एतच्छ्रुत्वा सिंहः अचिन्तयत्—"नूनमेषा गुहा स्वामिनः सदा समाह्वानं करोति। परन्तु मद्भयात् न किञ्चित् वदति।"

अथवा साध्विदम् उच्यते—

भयसन्त्रस्तमनसां हस्तपादादिकाः क्रियाः।
प्रवर्तन्ते न वाणी च वेपथुश्चाधिको भवेत्॥

शब्दार्थः—अथ = इसके पश्चात् (तब)। एतत् = यह। श्रुत्वा = सुनकर। अचिन्तयत् = सोचा। नूनम् = निश्चय ही (अवश्य)। एषा = यह। स्वामिनः = स्वामी का। समाह्वानम् = आह्वान। परन्तु = लेकिन। मम् = मेरे। भयात् = डर से। किञ्चित् = कुछ। वदति = कहता है। साधु = उचित। उच्यते = कहा गया है। भयः = डर। सन्त्रस्त = डरा हुआ। हस्त = हाथ। पाद = पैर आदि। प्रवर्तन्ते = प्रवृत्त होती हैं। वेपथुः = कम्पन। च = और। अधिको = अधिक। भवेत् = होता है।

हिन्दी अनुवाद—इसके बाद यह सुनकर सिंह ने सोचा- निश्चय ही यह गुफा स्वामी को बुलाती है। किन्तु मेरे भय से कुछ नहीं बोल रही है।

और ठीक कहा जाता है-

भय से डरे हुए मन वालों की हाथ-पैरों से सम्बन्धित क्रियाएँ तथा वाणी प्रवृत्त नहीं होती है और कम्पन अधिक होता है।

1. एतत् श्रुत्वा कः अचिन्तयत्?
2. सिंहः कः अचिन्तयत्?
3. सिंहानुसारेण गुहा कस्मात् कारणात् न किंचिदपि वदति?
4. हस्तपादादिकाः क्रिया वाणी च कस्य न प्रवर्तन्ते?
5. केषां हस्तपादादिकेषु वाण्यां च वेपथुः अधिकं भवति।
6. 'वेपथुः' इत्यस्य कोऽर्थः?
7. 'वदति' इत्यस्मिन् क्रियापदे धातुः लकारः वचनं पुरुषः च लिखत।
8. 'नूनमेषा' इत्यस्य संधि-विच्छेदः कर्त्तव्यः।

उत्तरम्– 1. एतत् श्रुत्वा सिंहः अचिन्तयत्। 2. सिंह अचिन्तयत् यत् नूनं एषा गुहा स्वामिनः सदा समाह्वानं करोति। 3. सिंहानुसारेण गुहा सिंहभयात् न किंचिदपि वदति। 4. भयसन्त्रस्तमनसां हस्तपादादिकाः क्रियाः वाणी च न प्रवर्तन्ते। 5. भयसन्त्रस्तमनसां हस्तपादादिकेषु वाण्यां च वेपथुः अधिकं भवति। 6. 'वेपथुः' इत्यस्य अर्थः 'कम्पनम्' अस्ति। 7. अत्र वद् धातुः, लट्लकारः, एकवचनं, प्रथमपुरुषः अस्ति। 8. नूनम् + एषा–नूनमेषा।

(5) तदहम् अस्य आह्वानं करोमि। एवं सः बिले प्रविश्य मे भोज्यं भविष्यति। इत्थं विचार्य सिंहः सहसा शृगालस्य आह्वानमकरोत्। सिंहस्य उच्चगर्जन-प्रतिध्वनिना सा गुहा उच्चैः शृगालम् आह्वयत्। अनेन अन्येऽपि पशवः भयभीताः अभवन्। शृगालोऽपि ततः दूरं पलायमानः इममपठत्—

अनागतं यः कुरुते स शोभते,
स शोच्यते यो न करोत्यनागतम्।
वनेऽत्र संस्थस्य समागता जरा,
बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता॥

शब्दार्थः—तद् = इसलिए। आह्वानं करोमि = बुलाता हूँ। एवम् = इस प्रकार। प्रविश्य = प्रवेश करके। मे = मेरा। भोज्यम् = भोजन। इत्थम् = इस प्रकार। विचार्य = विचार करके (सोचकर)। सहसा = अचानक। उच्चगर्जन = ऊँची गर्जना। प्रतिध्वनिना = गूँज के द्वारा। उच्चैः = जोर से। आह्वयत् = बुलाया। अनेन = इस प्रकार। भयभीताः = भय से डर कर। ततः = उससे। पलायमानः = भागता हुआ। इमम् = यह। अपठत् = पढ़ा। यः = जो। अनागतम् = न आने वाले को। कुरुते = करता है। शोभते = शोभा पाता है। सः = वह। करोति = करता है। शोच्यते = चिन्तनीय होता है। अत्र = यहाँ पर। संस्थस्य = रहते हुए। जरा = बुढ़ापा। समागता = आ गया। कदापि = कभी भी। मे = मैंने। श्रुता = सुनी।

हिन्दी अनुवाद—तो मैं इसको बुलाता हूँ। इस प्रकार वह बिल में प्रवेश करके मेरा भोजन हो जायेगा। इस प्रकार विचार करके सिंह ने अचानक सियार को बुलाया। सिंह की ऊँची गर्जन की गूँज से गुफा ने सियार को बुलाया। इससे दूसरे पशु भी भयभीत हो गए। सियार ने भी दूर भागते हुए यह पढ़ा।

जो व्यक्ति न आये हुए संकट का प्रतिकार करता है वह शोभा पाता है। जो न आये हुए का प्रतिकार नहीं करता है वह चिन्तनीय होता है। यहाँ वन में मैं बूढ़ा हो गया। मेरी वृद्धावस्था आ गई है लेकिन बिल/गुफा की वाणी (आवाज) मैंने कभी नहीं सुनी।

1. सिंहेन कस्य आह्वानम् कृतम्?
2. शृगालः कुत्र पलायितः?
3. कः बिले प्रविश्य भोज्यं भविष्यति?
4. कः शोभते?
5. यः अनागतं न करोति सः किं भवति?
6. बिलस्य वाणी केन न श्रुता?
7. 'प्रविश्य' पदे प्रकृति प्रत्ययौ पृथक्कृत्वा लिखत।
8. शृगालोऽपि पदस्य सन्धिविच्छेदं कृत्वा लिखत।

उत्तरम्– 1. सिंहेन शृगालस्य आह्वानं कृतम्। 2. शृगालः दूरं पलायितः। 3. शृगालः बिले प्रविश्य भोज्यं भविष्यति। 4. यः अनागतं कुरुते सः शोभते। 5. यः अनागतं न करोति सः शोच्यते। 6. बिलस्य वाणी शृगालेन न श्रुता। 7. प्र उपसर्गः, विश् धातु, ल्यप् प्रत्ययः अस्ति। 8. संधि विच्छेद-शृगालः +अपि = शृगालोऽपि ।

पाठ्यपुस्तकस्य प्रश्नोत्तराणि

1. उच्चारणं कुरुत (उच्चारण करो)—

कस्मिंश्चित्,	विचिन्त्य,	साध्विदम्,	क्षुधार्तः,	एतच्छ्रुत्वा,
भयसन्त्रस्तमनसाम्,	सिंहपदपद्धतिः,	समाह्वानम्,	प्रतिध्वनिः	

उत्तरम्– छात्राः शिक्षकसहायतया स्वयमेव वा कुर्वन्तु।

2. एकपदेन उत्तरं लिखत (एक पद में उत्तर लिखो)—

(क) सिंहस्य नाम किम् ? (सिंह का क्या नाम था?)

उत्तरम्—खरनखरः। (खरनखर)

(ख) गुहायाः स्वामी कः आसीत् ? (गुफा का स्वामी कौन था?)

उत्तरम्—दधिपुच्छ शृगालः। (दधिपुच्छ सियार)

(ग) सिंहः कस्मिन् समये गुहायाः समीपे आगतः ? (सिंह किस समय गुफा के पास आया?)

उत्तरम्—सूर्यास्तसमये। (सूर्य अस्त होने के समय)

(घ) हस्तपादादिकाः क्रियाः केषां न प्रवर्तन्ते ? (हाथ-पैर आदि क्रियाएँ किनकी प्रवृत्त नहीं होती हैं?)

उत्तरम्—भयसन्त्रस्तमनसाम्। (डरे हुए मन वालों की।)

(ङ) गुहा केन प्रतिध्वनिना ? (गुफा किससे गूँजने लगी?)

उत्तरम्— सिंहगर्जनेन। (सिंह के गर्जन से)

3. पूर्णवाक्येन उत्तरत—(पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए—)

(क) खरनखरः कुत्र प्रतिवसति स्म ? (खरनखर कहाँ रहता था?)

उत्तरम्—खरनखरः वने प्रतिवसति स्म। (खरनखर किसी वन में रहता था।)

(ख) महतीं गुहां दृष्ट्वा सिंहः किम् अचिन्तयत् ? (विशाल गुफा को देखकर सिंह ने क्या विचार किया?)

उत्तरम्—महतीं गुहां दृष्ट्वा सिंह अचिन्तयत्—नूनं एतस्यां गुहायां रात्रौ कोऽपि जीवः आगच्छति। (विशाल गुफा को देखकर सिंह ने विचार किया- निश्चय ही इस गुफा में रात को कोई जीव आता है।)

(ग) शृगालः किम् अचिन्तयत् ? (सियार ने क्या विचार किया?)

उत्तरम्—शृगालः अचिन्तयत्—'अहो विनष्टोऽस्मि। नूनम् अस्मिन् बिले सिंहः अस्तीति तर्कयामि। तत् किं करवाणि। (सियार ने सोचा- अरे नष्ट हो गया हूँ। निश्चय ही इस बिल में सिंह है, ऐसा लगता है। तो क्या करूँ।)

(घ) शृगालः कुत्र पलायितः ? (सियार कहाँ भाग गया?)

उत्तरम्—शृगालः ततः दूरं पलायितः। (सियार वहाँ से दूर भाग गया।)

(ङ) गुहासमीपमागत्य शृगालः किं पश्यति? (गुफा के पास आकर सियार क्या देखता है?)

उत्तरम्—गुहासमीपमागत्य श्रृगालः गुहायां प्रविष्टा सिंहपदपद्धतिः पश्यति।
(गुफा के पास आकर सियार गुफा में प्रवेश हुए सिंह के पैरों के चिह्न देखता है।)

(च) कः शोभते? (कौन सुशोभित होता है?)

उत्तरम्—यः अनागतं दुखस्य प्रतिकारं कुरुते सः शोभते। (जो न आये हुए दु:ख का प्रतिकार करता है वह सुशोभित होता है।)

4. रेखांकितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत— (रेखांकित पदों के आधार पर प्रश्नों का निर्माण कीजिए—)

(क) <u>क्षुधार्तः</u> सिंहः कुत्रापि आहारं न प्राप्तवान्? — उत्तरम्—<u>कीदृशः</u> सिंहः कुत्रापि आहारं न प्राप्तवान्?

(ख) <u>दधिपुच्छः</u> नाम शृगालः गुहायाः स्वामी आसीत्? — उत्तरम्—<u>किं</u> नाम शृगालः गुहायाः स्वामी आसीत्?

(ग) एषा गुहा <u>स्वामिनः</u> सदा आह्वानं करोति? — उत्तरम्—एषा गुहा <u>कान्</u> सदा आह्वानं करोति?

(घ) भयसन्त्रस्तमनसां <u>हस्तपादादिकाः</u> क्रियाः न प्रवर्तन्ते? — उत्तरम्—भयसन्त्रस्तमनसां <u>काः</u> क्रियाः न प्रवर्तन्ते?

(ङ) आह्वानेन शृगालः <u>बिले</u> प्रविश्य सिंहस्य भोज्यं भविष्यति? — उत्तरम्—आह्वानेन शृगालः <u>कुत्र</u> प्रविश्य सिंहस्य भोज्यं भविष्यति?

5. घटनाक्रमानुसारं वाक्यानि लिखत—

(क) गुहायाः स्वामी दधिपुच्छः नाम शृगालः समागच्छत्।

(ख) सिंहः एकां महतीं गुहाम् अपश्यत्।

(ग) परिभ्रमन् सिंहः क्षुधार्तो जातः।

(घ) दूरस्थः शृगालः रवं कर्त्तुमारब्धः।

(ङ) सिंहः शृगालस्य आह्वानमकरोत्।

(च) दूरं पलायमानः शृगालः श्लोकमपठत्।

(छ) गुहायां कोऽपि अस्ति इति शृगालस्य विचारः।

उत्तरम्—(क) परिभ्रमन् सिंहः क्षुधार्तो जातः।

(ख) सिंहः एकां महतीं गुहाम् अपश्यत्।

(ग) गुहायाः स्वामी दधिपुच्छः नाम शृगालः समागच्छत्।

(घ) गुहायां कोऽपि अस्ति इति शृगालस्य विचारः।

(ङ) दूरस्थः शृगालः रवं कर्त्तुमारब्धः।

(च) सिंहः शृगालस्य आह्वानमकरोत्।

(छ) दूरं पलायमानः शृगालः श्लोकमपठत्।

6. यथानिर्देशमुत्तरत (निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए–)

(क) 'एकां महतीं गुहां दृष्ट्वा सः अचिन्तयत्' अस्मिन् वाक्ये कति विशेषणपदानि, संख्यया सह पदानि अपि लिखत?

उत्तरम्– अत्र द्वे विशेषण पदे – एकां महतीं च।

(ख) 'तदहम् अस्य आह्वानं करोमि' - अत्र 'अहम्' इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

उत्तरम्– अत्र 'अहम्' इति पदं सिंहाय प्रयुक्तम्।

(ग) 'यदि त्वं मां न आह्वयसि' अस्मिन् वाक्ये कर्तृपदं किम्?

उत्तरम्– अत्र कर्तृपदं 'त्वम् (गुहा)' इति अस्ति।

(घ) 'सिंहपदपद्धतिः गुहायां प्रविष्टा दृश्यते' अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किम्?

उत्तरम्– अस्मिन् वाक्ये 'दृश्यते' इति क्रियापदम्।

(ङ) 'वनेऽत्र संस्थस्य समागता जरा, अस्मिन् वाक्ये अव्ययपदं किम्?

उत्तरम्– अस्मिन् वाक्ये 'अत्र' इति अव्ययपदम् अस्ति।

7. मञ्जूषातः अव्ययपदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत–(मञ्जूषा से अव्यय पद चुनकर रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए–)

कश्चन, दूरे, नीचैः, यदा, तदा, यदि, तर्हि, परम्, च, सहसा

एकस्मिन् वने .... व्याधः जालं विस्तीर्य .... स्थितः। क्रमशः आकाशात् सपरिवारः कपोतराजः ......आगच्छत्। .... कपोताः तण्डुलान् अपश्यन् .... तेषां लोभो जातः। परं राजा सहमतः नासीत्। तस्य युक्तिः आसीत् .... वने कोऽपि मनुष्यः नास्ति। कुतः तण्डुलान् सम्भवः। .... राज्ञः उपदेशम् अस्वीकृत्य कपोताः तण्डुलान् खादितुं प्रवृत्ताः जाले .... निपतिताः। अतः उक्तम् '............ विद्धीत न क्रियाम्'।

उत्तरम्– एकस्मिन् वने कश्चन व्याधः जालं विस्तीर्य दूरे स्थितः। क्रमशः आकाशात् सपरिवारः कपोतराजः नीचैः आगच्छत्। यदा कपोताः तण्डुलान् अपश्यन् तदा तेषां लोभो जातः। परं राजा सहमतः नासीत्। तस्य युक्तिः आसीत् यदि वने कोऽपि मनुष्यः नास्ति। कुतः तण्डुलान् सम्भवः। परम् राज्ञः उपदेशम् अस्वीकृत्य कपोताः तण्डुलान् खादितुं प्रवृत्ताः जाले तर्हि निपतिताः। अतः उक्तम् 'सहसा विद्धीत न क्रियाम्'।

योग्यता–विस्तारः

ग्रन्थ परिचय– पञ्चतन्त्र के रचनाकार पं. विष्णु शर्मा हैं। इसकी रचना उन्होंने अमरशक्ति राजा के मूर्खपुत्रों को राजनीति व अर्थशास्त्र में कुशल बनाने के उद्देश्य से की थी। इसमें पशु-पक्षियों की कथाओं का संकलन किया है। इसके पाँच खण्डों- 1. मित्रभेद, 2. मित्रसम्प्राप्ति, 3. काकोलूकीय, 4. लब्धप्रणाश, 5. अपरीक्षितकारक में 70 कथाएँ तथा 900 श्लोक हैं। श्लोकों में प्रायः तर्कपूर्ण नीति के श्लोक प्रयुक्त हैं। पञ्चतन्त्र का अनुवाद चतुर्थी शताब्दी के आस-पास ईरान की पहलवी भाषा में हुआ था। इसी आधार पर इसका विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ।

'काकोलूकीयम्' पञ्चतन्त्र का तृतीय तन्त्र (खण्ड) है। इसमें काक और उलूक की मुख्य कथा है, इसलिए इसका नाम काकोलूकीयम् पड़ा।

व्याकरणम्

अव्यय– संस्कृत भाषा में शब्दों के दो प्रकार हैं- 1. विकारी, 2. अविकारी। जो शब्द विकारग्रस्त या परिवर्तनशील होते हैं वे विकारी शब्द कहलाते हैं; जैसे–संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्द। जैसे- बालकः, सः, शुक्लः, गच्छति।

अविकारी शब्द अव्यय कहलाते हैं। विभक्ति, वचन, लिंग, पुरुष, काल के आधार पर इनके रूप परिवर्तित नहीं होते हैं। जैसे- अत्र, अधुना, अपि।

अव्ययों के भी दो भेद होते हैं–(1) रूढ़, (2) यौगिक।

1. रूढ़ अव्ययों के खण्ड नहीं होते हैं जैसे– अपि, च, खलु, वा, तु, न इत्यादि।

2. यौगिक अव्ययों के खण्ड होते हैं। कृत् प्रत्यय से बने अव्यय हैं– गत्वा, गन्तुम् इत्यादि। तद्धित प्रत्यय से बने अव्यय हैं– सर्वथा, एकदा, तत्र, इत्थम्, कथम् इत्यादि। समास रूप में अव्यय हैं– प्रतिदिनम्, यथाशक्ति इत्यादि।

प्रस्तुत पाठ में अव्यय इस प्रकार हैं–

1. रूढ़ अव्यय– न, नूनम्, अपि, तर्हि, एव, इति, च, बहिः अहो, एवम्, सह, अथ।

2. यौगिक अव्यय– इतस्ततः, दृष्ट्वा, अत्र, भूत्वा, विचिन्त्य, तदा, श्रुत्वा, सदा, परन्तु, प्रविश्य, सहसा, कदापि।